* **MCQ** [7]

1. "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं। मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है। अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता।" मेजर ध्यानचंद की इस बात से उनके बारे में क्या पता चलता है?
   (A) वे अत्यंत क्रोधी थे।
   (B) वे अच्छे ढंग से बदला लेते थे।
   (C) उन्हें हॉकी से मारने पर वे अधिक गोल करते थे।
   (D) वे जानते थे कि खेल को सही भावना से खेलना चाहिए।

   जवाब : वे जानते थे कि खेल को सही भावना से खेलना चाहिए।
2. लोगों ने मेजर ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' कहना क्यों शुरू कर दिया?
   (A) उनके हॉकी खेलने के विशेष कौशल के कारण
   (B) उनकी हॉकी स्टिक की अनोखी विशेषताओं के कारण
   (C) हॉकी के लिए उनके विशेष लगाव के कारण
   (D) उनकी खेल भावना के कारण

   जवाब : उनके हॉकी खेलने के विशेष कौशल के कारण
3. हॉकी का जादूगर' किसे कहा गया है?
   (A) मेजर ध्यानचंद (B) विराट कोहली (C) धोनी (D) सचिन

   जवाब : A
   व्याख्या : 'हॉकी का जादूगर' मेजर ध्यानचंद को कहा गया है।
4. इस पाठ से किस सन् की बात की है।
   (A) 1932 (B) 1933 (C) 1934 (D) 1935

   जवाब : (B) 1933
5. लेखक का जन्म किस सन् में हुआ ?
   (A) 1904 (B) 1905 (C) 1906 (D) 1907

   जवाब: (A) 1904
6. उस समय ध्यानचंद जी किस टीम की ओर से खेलते थे ?
   (A) हरियाणा रेजिमेंट (B) सैंपर्स एंड माइनर्स टीम (C) पंजाब रेजिमेंट (D) आगरा रेजिमेंट

   जवाब : C
   व्याख्या : उस समय ध्यानचंद जी पंजाब रेजिमेंट टीम की ओर से खेलते थे।
7. किस टीम में खिलाड़ी ने उनसे गेंद छीनने की कोशिश की?
   (A) हरियाणा रेजिमेंट (B) आगरा रेजिमेंट (C) पंजाब रेजिमेंट (D) माइनर्स टीम

   जवाब : (D) माइनर्स टीम

* **सही जोड़ मिलाए :** [5]

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

8.

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. लांस नायक	1. स्वतंत्रता से पहले सूबेदार भारतीय सैन्य अधिकारियों का दूसरा सबसे बड़ा पद था।
2. बर्लिन ओलंपिक	2. भारतीय सेना का एक पद (रैंक) है।
3. पंजाब रेजिमेंट	3. अंग्रेजों के समय का एक हॉकी दल ।
4. सैंपर्स एंड माइनर्स टीम	4. वर्ष 1936 में जर्मनी के बर्लिन शहर में आयोजित ओलंपिक खेल प्रति-योगिता, जिसमें 49 देशों ने भाग लिया था।
5. सूबेदार	5. स्वतंत्रता से पहले अंग्रेजों की भारतीय सेना का एक दल ।

जवाब : (1. → 2) (2. → 4) (3. → 5) (4. → 3) (5. → 1)

*** दिए गए पठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर चुनकर लिखिए :** [25]

9. खेल के मैदान में धक्का-मुक्की और नोंक-झोंक की घटनाएँ होती रहती हैं। खेल में तो यह सब चलता ही है। जिन दिनों हम खेला करते थे, उन दिनों भी यह सब चलता था।

सन् 1933 की बात है। उन दिनों में, मैं पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेला करता था। एक दिन 'पंजाब रेजिमेंट' और 'सैंपर्स एंड माइनर्स टीम' के बीच मुकाबला हो रहा था। 'माइनर्स टीम' के खिलाड़ी 'मुझसे गेंद छीनने की कोशिश करते, लेकिन उनकी हर कोशिश बेकार जाती। इतने में एक खिलाड़ी ने गुस्से में आकर हॉकी स्टिक मेरे सिर पर दे मारी।

प्रश्न-

(क) यह वक्तव्य कहाँ से लिया गया है? इसमें 'मैं' कौन है?

(ख) कौन-सी दो टीमें खेल रही थीं?

(ग) 'माइनर्स टीम' के खिलाड़ी ने किसके सिर पर और क्यों स्टिक मारी?

जवाब : (क) यह वक्तव्य 'गोल' पाठ से लिया गया है जिसके रचयिता मेजर ध्यानचंद हैं। इसमें 'मैं' मेजर ध्यानचंद के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(ख) 'पंजाब रेजिमेंट' और 'सैंपर्स एंड माइनर्स टीम' खेल रही थीं।

(ग) 'माइनर्स टीम' के खिलाड़ी ने मेजर ध्यानचंद के सिर पर स्टिक मारी क्योंकि वे जीत की ओर बढ़ रहे थे।

10. मैं पट्टी बाँधकर फिर मैदान में आ पहुँचा। आते ही मैंने उस खिलाड़ी की पीठ पर हाथ रखकर कहा, "तुम चिंता मत करो, इसका बदला मैं जरूर लूँगा।" मेरे इतना कहते ही वह खिलाड़ी घबरा गया। अब हर समय मुझे ही देखता रहता कि मैं कब उसके सिर पर हॉकी स्टिक मारने वाला हूँ। मैंने एक के बाद एक झटपट छह गोल कर दिए। खेल खत्म होने के बाद मैंने फिर उस खिलाड़ी की पीठ थपथपाई और कहा, "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं। मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है। अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता । " वह खिलाड़ी सचमुच बड़ा शर्मिंदा हुआ। तो देखा आपने मेरा बदला लेने का ढंग ? सच मानो, बुरा काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है कि उसके साथ भी बुराई की जाएगी।

प्रश्न 1.ध्यानचंद पट्टी बाँधकर क्यों आए ?

(क) उनके सिर में दर्द था।

(ख) उन्हें दूसरी टीम के खिलाड़ी ने स्टिक मारी थी।

(ग) वे गिर गए थे।

(घ) यह उनका शौक था।

प्रश्न 2.दूसरी टीम का खिलाड़ी घबरा क्यों गया था ?

(क) ध्यानचंद ने उसे कहा था कि वे उससे बदला लेंगे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख) वह खेल में हारने वाला था ।
(ग) उसे टीम से निकाला जा रहा था।
(घ) ध्यानचंद ने उसकी शिकायत खेलं विभाग में कर दी थी।
प्रश्न 3.ध्यानचंद ने झटपट कितने गोल किए?
(क) दो
(ख) चार
(ग) छह
(घ) नौ
प्रश्न 4.खिलाड़ी शर्मिंदा क्यों हुआ?
(क) ध्यानचंद ने उसे बड़े प्यार से माफ कर दिया।
(ख) ध्यानचंद ने उसके किए कार्य हेतु उसकी पीठ थपथपाई।
(ग) क्योंकि ध्यानचंद ने उसे बुरी तरह से हराकर अपना बदला लिया था ।
(घ) इनमें से कोई नहीं ।
प्रश्न 5.बुरा करने वाले के मन में सदा क्या विचार आता है?
(क) उसके साथ भी बुरा होगा।
(ख) जिसके साथ मैंने बुरा किया है उससे क्षमा माँग लेनी चाहिए।
(ग) उसे मन ही मन पछतावा होता है।
(घ) वह सबसे छिपकर रहना चाहता है।

जवाब : 1.(ख) उन्हें दूसरी टीम के खिलाड़ी ने स्टिक मारी थी।
2.(क) ध्यानचंद ने उसे कहा था कि वे उससे बदला लेंगे।
3.(ग) छह
4.(ग) क्योंकि ध्यानचंद ने उसे बुरी तरह से हराकर अपना बदला लिया था ।
5.(क) उसके साथ भी बुरा होगा।

11. आज मैं जहाँ भी जाता हूँ बच्चे व बूढ़े मुझे घेर लेते हैं और मुझसे मेरी सफलता का राज जानना चाहते हैं। मेरे पास सफलता का कोई गुरु मंत्र तो है नहीं। हर किसी से यही कहता कि लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।
प्रश्न-
(क) ध्यानचंद को हर जगह कौन घेर लेते है?
(ख) लोग उनसे क्या जानना चाहते हैं?
(ग) ध्यानचंद की नज़र में बड़े मूलमंत्र क्या हैं?

जवाब : (क) ध्यानचंद को हर जगह बूढ़े और बच्चे घेर लेते हैं।
(ख) वे उनसे उनकी सफलता का राज जानना चाहते हैं।
(ग) ध्यानचंद की नज़र में लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के बड़े मूलमंत्र हैं।

12. मेरा जन्म सन् 1904 में प्रयाग में एक साधारण परिवार में हुआ। बाद में हम झाँसी आकर बस गए। 16 साल की उम्र में मैं 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती हो गया। मेरी रेजिमेंट का हॉकी खेल में काफी नाम था। पर खेल में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। उस समय हमारी रेजिमेंट के सूबेदार मेजर तिवारी थे। वे बार-बार मुझे हॉकी खेलने के लिए कहते। हमारी छावनी में हॉकी खेलने का कोई निश्चित समय नहीं था । सैनिक जब चाहे मैदान में पहुँच जाते और अभ्यास शुरू कर देते। उस समय तक मैं एक नौसिखिया खिलाड़ी था ।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 1.मेजर ध्यानचंद का जन्म कब हुआ ?
(क) 1906
(ख) 1904
(ग) 1903
(घ) 1902

प्रश्न 2.सिपाही के रूप में वे सबसे पहले कहाँ भरती हुए ?
(क) फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट
(ख) बर्लिन ओलंपिक
(ग) पंजाब रेजीमेंट
(घ) सैंपर्स एंड माइनर्स टीम

प्रश्न 3.फर्स्ट ब्राह्मण रेजीमेंट के सूबेदार कौन थे ?
(क) मेजर बलवंत
(ख) मेजर ध्यानचंद
(ग) मेजर दानवीर
(घ) मेजर तिवारी

प्रश्न 4.सैनिक मैदान में जाकर क्या करते थे?
(क) दौड़ लगाते थे।
(ख) गप्पें हाँकते थे।
(ग) हॉकी का अभ्यास करते थे।
(घ) मैदान की सफाई करते थे।

प्रश्न 5.ध्यानचंद कैसे खिलाड़ी थे?
(क) कुशल
(ख) नौसिखिए
(ग) श्रेष्ठ
(घ) इनमें से कोई नहीं

जवाब : 1.(ख) 1904
2.(क) फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट
3.(घ) मेजर तिवारी
4.(ग) हॉकी का अभ्यास करते थे।
5.(ख) नौसिखिए

13. जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई। सन् 1936 में बर्लिन ओलंपिक में मुझे कप्तान बनाया गया। उस समय मैं सेना में लांस नायक था। बर्लिन ओलंपिक में लोग मेरे हॉकी खेलने के ढंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे 'हॉकी का जादूगर' कहना शुरू कर दिया। इसका यह मतलब नहीं कि सारे गोल मैं ही करता था। मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाएं। अपनी इसी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया। बर्लिन ओलंपिक में हमें स्वर्ण पदक मिला। खेलते समय मैं हमेशा इस बात का

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ध्यान रखता था कि हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।

प्रश्न-

(क) ध्यानचंद सर्वप्रथम किस टीम के कप्तान बने और कब ?

(ख) बर्लिन ओलंपिक के बाद ध्यानचंद को कौन-सी उपाधि मिली ?

(ग) खेलते समय ध्यानचंद किस बात का पूरा ध्यान रखते थे?

जवाब : (क) ध्यानचंद सर्वप्रथम सन् 1936 में बर्लिन ओलंपिक के कप्तान बने ।

(ख) बर्लिन ओलंपिक के बाद ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' की उपाधि मिली।

(ग) खेलते समय ध्यानचंद इस बात का ध्यान रखते थे कि हार या जीत मेरी नहीं बल्कि पूरे देश की होनी चाहिए।

*** प्रश्नों के उत्तर सक्षिप्त रूप में लिखो (3 Mark)** **[9]**

14. आप अपने जीवन में ध्यानचंद की कौन-कौन सी बातों को अपनाने की चेष्टा करेंगे?

जवाब : मैं अपने जीवन में ध्यानचंद की निम्नलिखित बातों को अपनाने की चेष्टा करूँगा /करूंगी।

(क) अपने जीवन का उद्देश्य अवश्य बनाना चाहिए ।

(ख) जो भी कार्य करो लगन और ईमानदारी से करो।

(ग) स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी ऊँचा उठाने का प्रयास करो।

(घ) सामूहिक रूप से प्राप्त की गई जीत का श्रेय सभी को दें।

(ङ) जीवन में तरक्की पाने पर भी स्वयं को कभी विराम न दें, निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

15. खेल जगत में ध्यानचंद का नाम विस्मरणीय है- कैसे?

जवाब : खेल जगत में ध्यानचंद का नाम अविस्मरणीय रहेगा। उनकी उपाधि 'हॉकी का जादूगर' कोई और शायद कभी न प्राप्त कर पाएगा। ओलंपिक खेलों में भारत को प्रथम स्वर्ण पदक ध्यानचंद के प्रयासों से ही प्राप्त हुआ। वे अपनी नहीं बल्कि देश की जीत को सर्वोपरि मानते थे।

यही कारण है कि उनका जन्मदिन 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है और भारत का सर्वोच्च खेल पुरस्कार 'खेल रत्न' उनके नाम पर दिया जाता है ।

16. ध्यानचंद में अच्छे खिलाड़ी होने के कौन-से विशेष गुण थे?

जवाब : ध्यानचंद में अच्छे खिलाड़ी होने के निम्नलिखित गुण थे-

(क) वे लगन, साधना और पूर्ण खेल भावना से खेलते थे।

(ख) वे जीतने का श्रेय स्वयं न लेकर पूरी टीम को देते थे।

(ग) वे अपना नहीं बल्कि अपने देश का नाम करना चाहते थे।

*** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए (2 Mark)** **[18]**

17. बुरा काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है कि उसके साथ भी बुराई की जाएगी।"

जवाब : यदि कोई व्यक्ति किसी को बुरा-भला कहता है, गलत व्यवहार करता है या किसी भी प्रकार की चोट पहुँचाता है तो उसे अपने अंतर्मन से ग्लानि का अहसास होता है। उसे ऐसा लगता है कि उसके साथ भी कभी भी कुछ बुरा घटित हो सकता है या जिसका बुरा उसने किया है, वह भी किसी-न-किसी रूप में उससे बदला अवश्य लेगा। जैसे – ध्यानचंद जब 'पंजाब रेजिमेंट' की ओर से 'सैं पर्स एंड माइनर्स' टीम के साथ खेल रहे थे तो उनसे मुकाबला न कर पाने पर एक खिलाड़ी ने उनके सिर पर स्टिक दे मारी। लेकिन थोड़ी देर के बाद जब मेजर ध्यानचंद सिर पर पट्टी बाँधकर फिर से खेलने आ गए तो वह मन-ही-मन डरने लगा।

18. "मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाए। अपनी इसी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जीत लिया।”

जवाब : इन पंक्तियों में ध्यानचंद के व्यक्तित्व की यह भावना उजागर होती है कि वे अपनी टीम में अपने साथियों का भी पूरा सम्मान करते थे। टीम की जीत का श्रेय केवल स्वयं न लेकर पूरी टीम को दिलाना चाहते थे। इसी कारण गोल के पास ले जाकर गेंद अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे देते थे ताकि वह भी गोल कर सके। उनकी इसी खेल भावना के कारण लोग उन्हें पसंद करते थे। ध्यानचंद ने अपने शब्दों में भी कहा है कि खेलते समय में इस बात का ध्यान रखता हूँ कि हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।

19. ध्यानचंद की सफलता का क्या रहस्य था?

जवाब : ध्यानचंद की सफलता का रहस्य था उनकी खेल के प्रति सच्ची लगन, साधना और खेल भावना। उन्होंने जब हॉकी खेलना शुरू किया तो वे बिल्कुल नौसिखिए थे। धीरे-धीरे अभ्यास से उनके खेल में निखार आता गया और उनको तरक्की भी मिलती गई। हॉकी सीखने के लिए कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वे निरंतर प्रयासरत रहे। 1936 में वे बर्लिन ओलंपिक टीम के कप्तान बने और अपने हॉकी खेलने के ढंग से लोगों को इतना प्रभावित किया कि 'हॉकी के जादूगर' कहलाए।

20. किन बातों से ऐसा लगता है कि ध्यानचंद स्वयं से पहले दूसरों को रखते थे?

जवाब : यह कथन सत्य है कि ध्यानचंद स्वयं से पहले दूसरों को रखते थे। वे गेंद को अपने साथियों के पास ले जाते थे ताकि वे गोल कर सकें। जीत का श्रेय केवल स्वयं न लेकर टीम को देना चाहते थे। दूसरी ओर इस बात का भी सदा ध्यान रखते थे कि हार या जीत उनकी नहीं पूरे देश की हो। जो यह दर्शाता है कि वे सच्चे देशप्रेमी थे।

21. ध्यानचंद के स्थान पर आप होते तो क्या आप बदला लेते? यदि हाँ, तो बताइए कि आप बदला किस प्रकार लेते?

जवाब : यदि मैं ध्यानचंद के स्थान पर होता तो मुझे अपने प्रतिद्वंदी पर क्रोध तो आता और पलटकर बदला लेने की इच्छा भी होती। एक खिलाड़ी होने के नाते स्वयं पर संयम रखता क्योंकि हार-जीत होना खेल का नियम होता है। मारपीट या ईर्ष्या करने वाला खिलाड़ी कभी सच्चा खिलाड़ी नहीं हो सकता, यह सोचकर चुप रहता ।

22. माइनर्स टीम के खिलाड़ी ने ध्यानचंद के सिर पर स्टिक क्यों मारी ?

जवाब : ध्यानचंद 'पंजाब रेजीमेंट' की ओर से खेल रहे थे। 'माइनर्स टीम के खिलाड़ी उनसे गेंद छीनने का प्रयास करने में विफल हो रहे थे। इतने में एक खिलाड़ी को गुस्सा आ गया उसने हॉकी स्टिक ही ध्यानचंद के सिर पर मार दी।

23. ध्यानचंद ने कब और कैसे 'हॉकी' खेलना शुरू किया?

जवाब : अपनी 16 वर्ष की आयु में ध्यानचंद 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में सिपाही के रूप में भर्ती हुए। टीम के सूबेदार मेजर तिवारी थे, उन्होंने ध्यानचंद को क्रिकेट खेलने के लिए प्रेरित किया। पहले तो वे नौसिखिए की भाँति खेलते थे लेकिन धीरे-धीरे उनके खेल में निखार आता गया ।

24. ध्यानचंद को 'हॉकी के जादूगर' की उपाधि क्यों मिली?

जवाब : सन् 1936 में बर्लिन ओलंपिक में जब उन्हें कप्तान बनाया गया तो वे सेना में 'लांस नायक' के पद पर थे। लोग उनके खेलने के ढंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें 'हॉकी का जादूगर' कहना शुरू कर दिया ।

25. पाठ 'गोल' हमें क्या शिक्षा देता है ?

जवाब : पाठ 'गोल' से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम जीवन में जिस राह का चुनाव करें पूरी तन्मयता से उसके लिए कार्य भी करें। परिस्थितियाँ कैसी भी हों, कभी अपने मार्ग से डगमगाना नहीं चाहिए। जैसे ध्यानचंद ने जब 'हॉकी' खेलने का मार्ग चुना तो बुलंदियों को छूकर ही दम लिया।

*** प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए (1 Mark)** **[12]**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

26. 'गोल' पाठ रचना की कौन-सी विधा है?

जवाब : 'गोल' पाठ रचना की विधा संस्मरण है।

27. सन् 1933 में ध्यानचंद किस रेजीमेंट की ओर से खेलते थे?

जवाब : सन् 1933 में ध्यानचंद 'पंजाब रेजीमेंट' की ओर से खेलते थे।

28. ध्यानचंद को किस टीम के खिलाड़ी ने हॉकी स्टिक मारी थी ?

जवाब : ध्यानचंद को 'सैंपर्स एंड माइनर्स' टीम के खिलाड़ी ने हॉकी स्टिक मारी थी।

29. ध्यानचंद ने उससे अपना बदला कैसे लिया?

जवाब : ध्यानचंद ने उससे अपना बदला लगातार छह गोल बना कर लिया।

30. ध्यानचंद जी सफलता का मूलमंत्र क्या था ?

जवाब : ध्यानचंद की सफलता का मूलमंत्र लगन, साधना और खेल भावना था ।

31. 'नौसिखिया' शब्द से आप क्या समझते हैं?

जवाब : 'नौसिखिया' शब्द का अर्थ नया सीखने वाला है।

32. बर्लिन ओलंपिक में जब ध्यानचंद कप्तान बने तो वे सेना के किस पद पर थे ?

जवाब : बर्लिन ओलंपिक में जब ध्यानचंद कप्तान बने तो वे 'लांस नायक' के पद पर थे।

33. 'बर्लिन ओलंपिक' में ध्यानचंद की टीम को कौन सा पदक प्राप्त हुआ?

जवाब : बर्लिन ओलंपिक' में ध्यानचंद की टीम को 'स्वर्ण पदक' प्राप्त हुआ।

34. ध्यानचंद का जन्मदिन किस रूप में मनाया जाता है?

जवाब : ध्यानचंद का जन्मदिन 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

35. भारत का सर्वोच्च 'खेल रत्न' पुरस्कार किसके नाम पर दिया जाता है?

जवाब : भारत का सर्वोच्च 'खेल रत्न' पुरस्कार ध्यानचंद के नाम पर दिया जाता है।

36. ध्यानचंद ने अपनी चोट का बदला लेने के लिए क्या किया?

जवाब : ध्यानचंद पट्टी बाँधकर फिर से मैदान में आ गए। उन्होंने लगातार छह गोल करके अपनी प्रतिद्वंदी टीम को बुरी तरह हराकर बदला लिया।

37. ध्यानचंद की सफलता का राज क्या था?

जवाब : ध्यानचंद का अपनी सफलता हेतु कोई गुरुमंत्र न था। वे यह मानते थे कि यदि हम खेल को लगन, साधना और खेल भावना से खेलें तो अवश्य सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

*** प्रश्नों के उत्तर लिखिए (4 Mark)** **[32]**

38. खेल के मैदान में धक्का-मुक्की और नोंक-झोंक की घटनाएँ होती रहती हैं। खेल में तो यह सब चलता ही हैं। जिन दिनों हम खेला करते थे, उन दिनों भी यह सब चलता था।
सन् 1933 की बात है। उन दिनों में, मैं पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेला करता था। एक दिन 'पंजाब रेजिमेंट' और 'सैंपर्स एंड माइनर्स टीम' के बीच मुकाबला हो रहा था। 'माइनर्स टीम' के खिलाड़ी मुझसे गेंद छीनने की कोशिश करते, लेकिन उनकी हर कोशिश बेकार जाती। इतने में एक खिलाड़ी ने गुस्से में आकर हॉकी स्टिक मेरे सिर पर दे मारी। मुझे मैदान से बाहर ले जाया गया।
QUESTON:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Q.1. इस गद्यांश में लेखक कब की घटना का वर्णन करता है ?
(A) 1930 की (B) 1933 की (C) 1935 की (D) 1943 की
Q.2. लेखक कौन-सा खेल खेलता था ?
(A) हॉकी (B) क्रिकेट (C)फुटबॉल (D) बॉलीबॉल
Q.3. खेल के मैदान में क्या होता रहता है ?
Q.4. लेखक किस टीम की ओर से खेला करता था ?

जवाब : 1. (B) 1933 की
2. (A) हॉकी
3. खेल के मैदान में धैक्का-मुक्की और नोंक-झोंक होती रहती है। खेल के दौरान ऐसी बात तो होती ही रहती हैं। उन दिनों में भी यह सब होता था।
4. लेखक 'पंजाब रेजिमेंट' की ओर से खेला करता था।

39. खेल के मैदान में धक्का-मुक्की और नोंक-झोंक की घटनाएँ होती रहती हैं। खेल में तो यह सब चलता ही हैं। जिन दिनों हम खेला करते थे, उन दिनों भी यह सब चलता था।
सन् 1933 की बात है। उन दिनों में, मैं पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेला करता था। एक दिन 'पंजाब रेजिमेंट' और 'सैंपर्स एंड माइनर्स टीम' के बीच मुकाबला हो रहा था। 'माइनर्स टीम' के खिलाड़ी मुझसे गेंद छीनने की कोशिश करते, लेकिन उनकी हर कोशिश बेकार जाती। इतने में एक खिलाड़ी ने गुस्से में आकर हॉकी स्टिक मेरे सिर पर दे मारी। मुझे मैदान से बाहर ले जाया गया।
QUESTON:
Q.1. लेखक किस टीम की ओर से खेलता था ?
(A) पंजाब रेंजिमेंट की ओर से (B) जाट रेजिमेंट की ओर से (C) सैपर्स एंड माइनर्स की ओर से (D) सिख रेजिमेंट की ओर से
Q.2. माइनर्स टीम के खिलाड़ी ने क्या कर दिया ?
(A) एक गोल कर दिया। (B) लेखक के सिर में स्टिक मार दी। (C) नीचे गिरा दिया। (D) कुछ नहीं किया।
Q.3. 1933 में किस-किसके बीच मैच हो रहा था ?
Q.4. विपक्षी टीम के खिलाड़ी ने लेखक के साथ कैसा व्यवहार कर दिया ?

जवाब : 1. (A) पंजाब रेंजिमेंट की ओर से
2.(B) लेखक के सिर में स्टिक मार दी।
3. 1.' ' में 'पंजाब रेजिमेंट' तथा 'सैपर्स एंड माइनर्स टीम' के बीच मैच में मुकाबला हो रहा था।
4. विपक्षी टीम के एक खिलाड़ी ने गुस्से में आकर लेखक के सिर पर हॉकी की स्टिक दे मारी। लेखक को मैदान से बाहर ले जाया गया।

40. थोड़ी देर बाद मैं प्टी बाँधकर फिर मैदान में आ पहुँचा। आते ही मैंने उस खिलाड़ी की पीठ परं हाथ रखकर कहा, "तुम चिंता मत करो, इसका बदला मैं जरूर लूँगा।" मेरे इतना कहते ही वह खिलाड़ी घबरा गया। अब हर समय मुझे ही देखता रहता कि मैं कब उसके सिर पर हॉकी स्टिक मारने वाला हूँ। मैंने एक के बाद एक झटपट छह गोल कर दिए। खेल खत्म होने के बाद मैंने फिर उस खिलाड़ी की पीठ थपथपाई और कहा, "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं। मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है। अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता।" वह खिलाड़ी सचमुच बड़ा शर्मिंदा हुआ। तो देखा आपने मेरा बदला लेने का ठंग? सच मानो, वुए काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है कि उसके साथ भी बुराई की जाएगी!
QUESTON:
Q.1. लेखक पट्टी बाँधकर मैदान पर क्यों आया ?
(A) लेखक के सिर पर विपक्षी टीम के एक खिलाड़ी ने हॉकी की स्टिक मार दी थी। (B) लेखक मैदान में गिरकर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

घायल हो गया था। (C) उसके सिर में पीड़ा था। (D) सिर की रक्षा के लिए।

Q.2. लेखक की बात सुनकर उस खिलाड़ी की क्या दशा हुई ?

(A) वह चौंक गया। (B) वह घबरा गया। (C) वह सोचने लगा। (D) वह भाग गया।

Q.3. लेखक ने विपक्षी टीम के खिलाड़ी से क्या कहा ?

Q.4. लेखक ने सिर पर पट्टी बाँधकर क्या करिश्मा कर दिखाया ?

जवाब : 1. (A) लेखक के सिर पर विपक्षी टीम के एक खिलाड़ी ने हॉकी की स्टिक मार दी थी।

2. (B) वह घबरा गया।

3. लेखक ने विपक्षी टीम के खिलाड़ी की पीठ पर हाथ रखकर कहा-" तुम चिंता मत करो, इसका बदला मैं जरूर लूँगा।"

4. लेखक सिर पर पट्टी बाँधकर मैदान में लौट आया और उसने झटपट छह गोल करने का करिश्मा कर दिखाया।

41. थोड़ी देर बाद मैं प्टी बाँधकर फिर मैदान में आ पहुँचा। आते ही मैंने उस खिलाड़ी की पीठ परं हाथ रखकर कहा, "तुम चिंता मत करो, इसका बदला मैं जरूर लूँगा।" मेरे इतना कहते ही वह खिलाड़ी घबरा गया। अब हर समय मुझे ही देखता रहता कि मैं कब उसके सिर पर हॉकी स्टिक मारने वाला हूँ। मैंने एक के बाद एक झटपट छह गोल कर दिए। खेल खत्म होने के बाद मैंने फिर उस खिलाड़ी की पीठ थपथपाई और कहा, "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं। मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है। अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता।" वह खिलाड़ी सचमुच बड़ा शर्मिदा हुआ। तो देखा आपने मेरा बदला लेने का ढंग? सच मानो, वुए काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है कि उसके साथ भी बुराई की जाएगी!

QUESTON:

Q.1. लेखक ने अपना बदला कैसे लिया ?

(A) झटपट छह गोल करके (B) उसको स्टिक मारकर (C) उसे गाली देकर (D) गुस्सा करके

Q.2. बुरा करने वाला आदमी ________.

(A) (क) डरा रहता है। (B) बुराई करता रहता है। (C) चुप रहता है। (D) कुछ नहीं करता।

Q.3. छह गोल करने के बाद लेखक ने उस खिलाड़ी से क्या कहा ?

Q.4. लेखक की बात सुनकर उस खिलाड़ी की क्या दशा हुई ?

जवाब : 1. (A) झटपट छह गोल करके

2. (A) डरा रहता है।

3. छह गोल करने के बाद लेखक ने उस खिलाड़ी की पीठ थपथपाई और कहा-" दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं। मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है। अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता।''

4. लेखक की बात सुनकर वह खिलाड़ी शर्मिदा हुआ।

42. मेरा जन्म सन् 1904 में प्रयाग में एक साधारण परिवार में हुआ। बाद में हम झाँसी आकर बस गए। 16 साल की उम्र में मैं 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती हो गया। मेरी रेजिमेंट का हॉकी खेल में काफी नाम था। पर खेल में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। उस समय हमारी रेजिमेंट के सूबेदार मेजर 'तिवारी थे। वे बार-बार मुझे हॉकी खेलने के लिए कहते। हमारी छावनी में हॉकी खेलने का कोई निश्चित समय नहीं था। सैनिक जब चाहे मैदान में पहुँच जाते और अभ्यास शुरू कर देते। उस समय तक मैं एक नौसिखिया खिलाड़ी था।

QUESTION:

Q.1. लेखक का जन्म कब हुआ था ?

(A) 1902 में (B) 1903 में (C) 1904 में (D) 1905 में

Q.2. लेखक कितने साल की उम्र में 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में सिपाही के रूप में भर्ती हुआ ?

(A) 15 साल की (B) 16 साल की (C) 17 साल की (D) 18 साल की

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Q.3. लेखक का जन्म कब और कैसे परिवार में हुआ था ?
Q.4. बाद में लेखक का परिवार कहाँ आकर बस गया ?

जवाब : 1. (B) 1903 में
2. (B) 16 साल की
3. लेखक का जन्म 1904 ई. में प्रयाग के एक साधारण परिवार में हुआ था।
4. बाद में लेखक का परिवार झाँसी (उत्तर प्रदेश) में आकर बस गया।

43. उनकी रेजिमेंट के सूबेदार मेजर कौन थे ?मेरा जन्म सन् 1904 में प्रयाग में एक साधारण परिवार में हुआ। बाद में हम झाँसी आकर बस गए। 16 साल की उम्र में मैं 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती हो गया। मेरी रेजिमेंट का हॉकी खेल में काफी नाम था। पर खेल में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। उस समय हमारी रेजिमेंट के सूबेदार मेजर 'तिवारी थे। वे बार-बार मुझे हॉकी खेलने के लिए कहते। हमारी छावनी में हॉकी खेलने का कोई निश्चित समय नहीं था। सैनिक जब चाहे मैदान में पहुँच जाते और अभ्यास शुरू कर देते। उस समय तक मैं एक नौसिखिया खिलाड़ी था।

QUESTION:
Q.1. उनकी रेजिमेंट के सूबेदार मेजर कौन थे ?
(A) मेजर तिवारी (B) मेजर मिश्रा (C) मेजर रवींद्रनाथ (D) मेजर गुप्ता
Q.2. प्रारंभ में लेखक कैसा खिलाड़ी था ?
(A) नौसिखिया (B) कुशल (C) योग्य (D) चतुर
Q.3. लेखक कब, किस रेजिमेंट में, किस रूप में भर्ती हुआ ?
Q.4. उन दिनों रेजिमेंट में किस खेल का नाम था ?

जवाब : 1. (A) मेजर तिवारी
2. (A) नौसिखिया
3. लेखक 16 साल की उम्र में, 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में एक सिपाही के रूप में भर्ती हुआ।
4. उन दिनों लेखक की रेजिमेंट में हॉकी खेल का काफी नाम था।

44. जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई। सन् 1936 में बर्लिन ओलंपिक में मुझे कप्तान बनाया गया। उस समय मैं सेना में लांस नायक था। बर्लिन ओलंपिक में लोग मेरे हॉकी खेलने के ढंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे 'हॉकी का जादूगर' कहना शुरू कर दिया। इसका यह मतलब नहीं कि सारे गोल मैं ही करता था। मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाए। अपनी इसी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया। बर्लिन ओलंपिक में हमें स्वर्ण पदक मिला। खेलते समय मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखता था कि हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।

QUESTION:
Q.1. खेलने के दौरान लेखक को क्या लाभ मिला ?
(A) उनका खेल निखरता चला गया। (B) उन्हें तरक्की भी मिलती चली गई। (C) (क)-(ख) दोनों (D) कुछ नहीं
Q.2. बर्लिन ओलंपिक कब हुए ?
(A) 1935 में (B) 1936 में (C) 1938 में (D) 1940 में
Q.3. बर्लिन ओलंपिक में लेखक को क्या बनाया गया ?
Q.4. लेखक की खेल के दौरान क्या कोशिश रहती थी ?

जवाब : 1. (C) (क)-(ख) दोनों
2. (B) 1936 में
3. बर्लिन ओलंपिक (1936) में लेखक को भारतीय हॉकी टीम का कप्तान बनाया गया। उस समय लेखक सेना में

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

केवल लांस नायक के पद् पर थे।

4. खेल के दौरान लेखक की यह कोशिश रहती थी कि वे गेंद को गोल के पास ले जाकर गेंद अपने किसी अन्य साथी को दे दें ताकि गोल करने का श्रेय उस खिलाड़ी को मिल जाए।

45. जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई। सन् 1936 में बर्लिन ओलंपिक में मुझे कप्तान बनाया गया। उस समय मैं सेना में लांस नायक था। बर्लिन ओलंपिक में लोग मेरे हॉकी खेलने के ढंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे 'हॉकी का जादूगर' कहना शुरू कर दिया। इसका यह मतलब नहीं कि सारे गोल मैं ही करता था। मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाए। अपनी इसी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया। बर्लिन ओलंपिक में हमें स्वर्ण पदक मिला। खेलते समय मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखता था कि हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।

QUESTION:

Q.1. लेखक को 'हॉकी का जादूगर' कब कहा जाने लगा ?

(A) बर्लिन ओलंपिक के दौरान (B) भारत में खेलते समय (C) स्पेन ओलंपिक के दौरान (D) रूस के खेलों में

Q.2.बर्लिन ओलंपिक में कौन-सा पदक मिला ?

(A) रजत पदक (B) स्वर्ण पदक (C) कांस्य पदक (D) कोई नहीं

Q.3. बर्लिन ओलंपिक में क्या सम्मान मिला ?

Q.4. खेलते समय किस बात का ध्यान रखते थे ?

जवाब : 1. (A) बर्लिन ओलंपिक के दौरान

2. (B) स्वर्ण पदक

3. बर्लिन ओलंपिक (1936) में लेखक की टीम को स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया गया।

4. खेलते समय लेखक सदैव इस बात का ध्यान रखते थे कि खेल में जीत या हार उनकी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।

----- -----

Student Bro

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in